Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2018 = 6.371, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFERRED JOURNAL, MAR-APR, 2019, VOL- 6/50

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों पर उपनिषदों का प्रभाव

डॉ विन्दुमती द्विवेदी

सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय,हरिद्वार

Abstract

उपनिषदों के गूढ तत्व को भगवान श्रीकृष्ण ने सार रूप में गीता में अभिव्यक्त करके र्स्वसुलभ बना दिया वस्तुतः देखा जाये तो युद्ध भूमि में गीता श्रीकृष्ण के द्वारा अर्जुन के निमित कही गयी किन्तु व्यवहारिक रूप से जन सामान्य को दिशा निर्देशन देने का कार्य श्रीमदभगवतगीता के द्वारा ही हो रहा है। जैसा की प्रसिद्ध है- ***सर्वोपनिषदो गावो दोग्धागोपालनन्दनः। पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्तादुग्धं गीतामृतम महत्।।*** *अर्थात् सभी उपनिषदे गाय के समान है और गोपाल नन्दन श्रीकृष्ण दुध निकालने वाले है अर्जुन बछडे के रूप में है और गीता रूपी अमृत ही दुध के समान है। जिसका पान कर सर्वजगत चाहे वह भारतीय हो या पाश्चात्य वह मानसिक स्तर को विकसित कर समाजिक सोहार्द को विकसित करने का कार्य कर* ***वसुधैवकुटुम्बकम*** *की अवधारणा को सार्थक बनाता है प्रस्तुत लेख* ***भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों पर उपनिषदों का प्रभाव*** *के माध्यम से उपनिषद की विवेचना की जा रही है।*

प्रस्तावना– वस्तुतः श्रीमद् भगवद्गीता वेदान्त दर्शन को प्रतिपादित करने वाले सरलतम् ग्रन्थ के रूप में हमें प्राप्त है। उपनिषदों ने जिस तथ्य की ओर इंगित किया है गीता में वे ही तथ्य अर्जुन के निमित्त श्रीकृष्ण के मुख से निःस्तृत हैं। इसीलिए गीता को उपनिषदों का सार कहा जाता है।[1] वस्तुतः वेदान्त दर्शन ही गीता का प्रतिपाद्य है। उपनिषदों में जिस परब्रह्म परमात्मा का सर्वशक्तिमान के रूप में प्रतिपादन है, वहीं परब्रह्म श्रीमद्भगवद्गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण के रूप में विराजमान है। वही आदि देव, पुराण पुरूष एवं विश्व के महान कोष के रूप में अर्जुन के समक्ष हैं। अर्जुन कहते हैं - *"हे*

[1] *सर्वोपनिशदों गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।*
पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतम् महत्।। – महर्शि वेदव्यास।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

योगेश्वर आप आदि देव, सनातन पुरूष, समस्त विश्व को धारण करने वाले हैं। वायु, यम, अग्नि, वरूण चन्द्रमा, प्रजापति सब आप ही हैं।''[२]

भारतीय दृष्टिकोण–उपनिषदों के सिद्धान्त इतने सार्थक एवं सार्वभौमक हैं कि उनका विद्वत्समाज पर अमिट प्रभाव पड़ा है। वे विद्वान चाहे किसी भी देश के निवासी और किसी भी धर्म के अनुयायी क्यों न हो। भारत के मध्यकालीन इतिहास में सम्राट अकबर का नाम आदर एवं सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अकबर के व्यक्तित्त्व में महापुरूषों की सभी विशेषताएँ समाविष्ट थीं। वह एक निपुण राजनीतिज्ञ, असामान्य विद्याप्रेमी और धर्म निरपेक्ष शासक था। अपने विद्याप्रेम के कारण अकबर ने हिन्दू ज्ञानग्रन्थों रामायण, महाभारत, योगवाशिष्ठ और गीता आदि संस्कृत के ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद कराया।

अकबर के पौत्र शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह भी अपने पितामह की भाँति ज्ञानजिज्ञासु प्रवृत्ति से युक्त हुए। दाराशिकोह का सबसे बड़ा कार्य था उपनिषदों का फारसी भाषान्तर। **'सिर्रे अकबर'** नामक महान ग्रन्थ में ५० उपनिषद् अनुदित करके संकलित किये गये। इसके रचनाकाल के ६४ वर्ष बाद सन् १७२० ई० में इसका एक अनुवाद उपनिषद् भाष्य के नाम से हिन्दी में हुआ।[३] दाराशिकोह का यह कार्य धार्मिक एकता के लिए आधारस्तम्भ साबित हुआ। उनके प्रचार से मुसलमान फकीर अधिक प्रभावित हुए। सूफी मत की अद्धैत भावना का मूल उपनिषदों का ही अद्वैत था, जिसमें कुछ दूसरे तत्त्व भी शामिल किये गये।

दाराशिकोह द्वारा सम्पादित फारसी अनुवाद की फ्रेन्च और लैटिन दो भाषाओं में अनुवाद हुआ जिसमें लैटिन अनुवाद पेरिस से प्रकाशित हुआ। इस लैटिन भाषान्तर के आधार पर दाराशिकोह के सम्पादित महान ग्रन्थ के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद छपे। इस प्रकार संस्कृत भाषा में संगृहीत महान ज्ञान का रहस्य दुनिया के सम्मुख प्रकट होने लगा। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान **आर्थर शापेनहार** ने उक्त लैटिन अनुवाद का अध्ययन करने के बाद भावविभार होकर कहा कि – *''उपनिषद् ज्ञान विश्व के*

---

[२] *''त्वमादिदेवः पुरूशः पुराणः त्वमस्यवि वस्य परं निधानम्''*
''वायुर्यमोऽग्निर्वरूणः भा ाांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामह च।'' – गीता – 11–38, 39

[३] *डॉ0 भयाम सुन्दरदास – हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, भाग–1,* पृश्ठ–15

पथप्रदर्शन के लिए एक ज्योति है। न केवल जीवन में मुझे उपनिषद् ग्रन्थों के अध्ययन से शान्ति प्राप्त हुई, वरन् मृत्यु पर भी वे मुझे शान्ति प्रदान करेंगे।''[४]

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन में सत्य की महत्ता सर्वविदित है। उन्होंने सत्य को ईश्वर का रूप माना। उनका यह विचार उनके औपनिषदिक चिन्तन का परिणाम है। ईशावास्योपनिषद् के प्रथम मन्त्र के विषय में गाँधी जी कहते हैं कि - *''जब मैं इस मन्त्र को ध्यान को रखकर गीता को पढ़ता हूँ तो मुझे लगता है कि गीता भी इसी मन्त्र का भाष्य है।''*[५]

''उपनिषदों के अद्भुत सिद्धान्तों का उल्लेख करते हुए शापेनहार ने फिर कहा है कि - ये सिद्धान्त ऐसे हैं जो एक तरह से अपौरूषेय ही हैं। ये जिनके मस्तिष्क की उपज हैं, उन्हें निरे मनुष्य कहना कठिन है।''[६]

पाश्चात्य दृष्टिकोण–वेद मनुष्यरचित नहीं हैं - अपितु अपौरूषेय हैं, इस मान्यता का उपर्युक्त पंक्तियों में अत्यन्त अनूठा अनुमोदन है। पाल डायसन नामक जर्मनी के एक अन्य विद्वान ने उपनिषदों का मूल संस्कृत में अध्ययन करके **'उपनिषद्-दर्शन'** नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक का निर्माण किया। उन्होंने लिखा है कि - *''उपनिषदों के भीतर जो दार्शनिक कल्पना है, वह भारत में तो अद्वितीय है ही, संभवतः सम्पूर्ण विश्व में अतुलनीय है।''*[७]

शापेनहार ने उपनिषद्ज्ञान की महत्ता के सम्बन्ध में जो उद्गार व्यक्त किये हैं, उनके सम्बन्ध में मैक्समूलर का कथन है कि - *''यदि शापेनहार के अभिमत का समर्थन करने की आवश्यकता हुई तो वे अपने दीर्घजीवन के अध्ययन के बल पर अन्तःकरण से उसका समर्थन करेंगे।''*[८]

---

[4] *"In the whole world, there is no study so elevating as that of the Upanishads. It has been the solace of my life. It will be the solace of my death."*
- Quoted in Kalyan – Upanishad Ank - Geeta Press Gorakhpur, Page - 87

[5] *गाँधी वाङ्मय खण्ड* – 57 – पृश्ठ 288–90

[6] *Almost super human conceptions whose originators can hardly be said to be mere men* – Ibid.

[7] *"Philosophical conceptions unequalled in India, or perhaps anywhere else in the world."* Paul Deussen – Philosophy of the Upanishads.

[8] *"If these words of Shopenhaure required any confirmation, I would willingly give it as a result of life long study."* - कल्याण उपनिशद् अंक में उद्धृत – पृ–87

प्राच्यविद्याविशारद बेवर साहब ने जर्मन भाषा में एक पुस्तक की रचना की, जिसका नाम है - **'इण्डिस्केन स्टडियन'**। इस पुस्तक के कुल सत्रह भाग हैं। इसमें १४ उपनिषद्ग्रन्थों को अत्यन्त शुद्धता के साथ सम्पादित कर प्रकाशित किया गया है।

महापण्डित मैक्समूलर ने अपने प्राच्यविद्या प्रेम के कारण एक ग्रन्थमाला का प्रकाशन किया था, जिसमें वैदिक साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर शोधपूर्ण सामग्री प्रकाशित की गई। इसमें पूर्वोक्त १२ उपनिषदों का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया गया है। भारत में सबसे पहला अंग्रेजी अनुवाद राजाराम मोहनराय का है जिसे उन्होंने १८१६-१६ ई० के बीच सम्पन्न किया।

उपनिषद्ग्रन्थों में भारतीय संस्कृति की जड़ें समाहित है। कर्त्तव्याकर्त्तव्य विवेचन द्वारा मानवमात्र को उद्बोधित करने वाले इन ग्रन्थों में भारतीय आचार-विचार, ज्ञान विज्ञान, दिनचर्या एवं संस्कार दृष्टिगोचर होते हैं। भारतीय साहित्य संस्कृति के प्रति, आचार-विचार के प्रति अतिशय श्रद्धा रखने वाली विदुषी महिला **डॉ० एनी बेसेन्ट** ने उपनिषद् विद्या की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि भारत का यह ज्ञान मानव चेतना का सर्वोच्च फल है।[६]

निष्कर्ष-इस प्रकार औपनिषद् दर्शन में वेदान्त के जो तथ्य हैं, सभी गीता में उपलब्ध हैं। इसीलिए गीता जो स्वयं योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के मुख से निःस्तृत है, समस्त उपनिषदों के निष्कर्ष के रूप में सुप्रसिद्ध है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

१ महर्षि वेदव्यास।

२ 'गीता - ११-३८, ३६

[३] *डॉ० श्याम सुन्दरदास - हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण, भाग-१,* पृष्ठ-१५

[४] न्चंदर्पोंक ।दा . ळममजं च्तमे ळवतीीचनतए च्ंहम . ८७

[५] *गाँधी वाङ्मय खण्ड* - ५७ - पृष्ठ २८८-६०

[६] *।सउवेज `नचमत ीनउंद बवदबमचजपवदे ूविेम वतपहपदंजवते बंद ीतकसल इम `पक जव इम उमतम उमद दृ* ष्इपकण

७ चीपसवेवचील व िजीम न्चंदर्पोंकेण

[9] *"Personally I regard the Upanishads as the highest product of the human mind, the crystallized wisdom of divinely illumined men."* – Dr. Amie Basent

संस्कृत साहित्य का इतिहास – वाचस्पति गैरोला – पृ0 134 में उद्धृत।

[८] कल्याण उपनिषद् अंक में उद्धृत - पृ-८७
[९] *संस्कृत साहित्य का इतिहास - वाचस्पति गैरोला* - पृ० १३४ में उद्धृत।